प्रथम अध्याय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

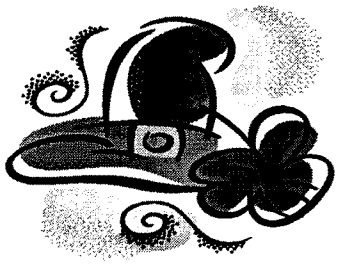

प्रथम अध्याय

"भारतेन्दु हरिश्चन्द्र - व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रस्तावना :

19 वीं शताब्दी के एक नवीन क्रांतिकारी प्रगतिशील और ओजस्वी विचारो के सृजनकर्ता के रूप में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पहचाने जाते हैं। उनकी विविध रचनाओं के अध्ययन से हमें उनकी बहुआयामी प्रतिभा का ज्ञान होता है। उनका समस्त साहित्य हिंदी के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत हैं। बचपन से ही माता-पिता के देहांत के बाद बालक 'हरिश्चन्द्र' को अनेक कठिनाइयों का सामना करके उन मुश्किलों में से अपना रास्ता खुद बनाना पड़ा था। वे एक महान समाजसेवक, युगचेतन कर्ता तो थे ही, परंतु उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों का जो, मानसिक तथा बौद्धिक उद्‌बोधन किया वह प्रशंसनीय रहा।

1.1.व्यक्तित्व :

1.1.1.जन्मतिथि :

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र काशी में भाद्रपद विक्रम संवत्, 6 सितम्बर 1850 को हुआ।

1.1.2 जन्मस्थान :

हरिश्चन्द्र का जन्म काशी में हुआ था। उनके वंशज हिसार के निकट हरियाणा राज्य के थे।

1.1.3 माता-पिता :

हरिश्चन्द्र के पिता का नाम गोपालचन्द्र था। वे स्वयं उच्च कोटी के कवि थे। वे संस्कृत और हिंदी के ज्ञाता थे। उनकी माता का नाम पार्वतीदेवी था जो दिल्ली के शाहजादों के दीवान राय खिरोधरलाल की पुत्री थी। गोपालचन्द्र का विवाह इनके साथ 1843 में हुआ था। पार्वतीदेवी की चार संताने हुई-मुकुंदी बीबी, हरिश्चन्द्र,

गोकुलचन्द्र और गोविन्दी बीबी। 1860 ई.में गोपालचन्द्र की मृत्यु बहुत अधिक भाँग चढ़ लेने के कारण हुई।

1.1.4 बचपन :

भारतेन्दु बाबू का बचपन विद्वत समाज के बीच बीता था। पाँच वर्ष की आयु में जब उन्हें अक्षराभ्यास भी नहीं था, उस समय अपने पिता के, बलराम कथामृत' की रचना सुनकर एक दोहा कहा था। इससे उनकी ग्रहण क्षमता और कुशाग्रबुद्धि का परिचय मिलता है। माता-पिता के देहांत के बाद पाँच साल की उम्र से ही इस बालक को जीवन के उतार-चढ़ाव का डटकर सामना करना पड़ा।

1.1.5 परिवार :

हरिश्चन्द्र का जन्म बनारस के एक अग्रवाल परिवार में हुआ। उनके परदादा सेठ फतेहचन्द्र, सेठ अमीचन्द्र के नौ बेटों में से थे। सेठ फतेहचन्द्र के पोते गोपालचन्द्र एक चतुर व्यापारी थे। जिस तरह कीचड़ में कमल खिलता है, उसी तरह अंग्रेज राजभक्त परिवार में देशभक्त हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ।

1.1.6 शिक्षा :

माता-पिता के देहांत के बाद हरिश्चन्द्र को शिक्षा का पूरा प्रबन्ध न हो सका। प्रारंभ में उनकी शिक्षा घर पर ही हुई। उसके बाद वे बनारस के क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। राजा शिवप्रसाद सितार-ए-हिन्द तथा नन्द किशोर से उन्हें अंग्रेजी शिक्षा मिली। उसके बाद हरिश्चन्द्र को क्वीन्स कॉलेज में भरती किया गया था। स्कूल की पढ़ाई ग्यारह साल की उम्र में अचानक छोड़ दी। परन्तु उनको ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा प्राप्त थी और एक बार पढ़ने से ही सब कुछ याद हो जाता था। वे कुशाग्र और तीव्र स्मरण शक्ति के थे ।

1.1.7 विवाह :

भारतेन्दु का विवाह सन् 1861 के आसपास शिवाले के रईस लाला गुलाबराय की सुपुत्री मन्नोदेवी के साथ हुआ था। उनका विवाह अल्पायु में हुआ था।

उनका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं था। उन्होंने आलीजान नामक एक वैश्या की शुदिध करके उसे हिन्दू बनाया, उसका नाम माधवी रखा और उसे अपनी उपपत्नी के रूप में रख लिया। इसके बाद मल्लिका नाम की स्त्री हरिश्चन्द्र के जीवन में आई।

1.1.8 संतान -

पत्नी मन्नोदेवी से हरिश्चंद्र के दो बेटे और एक बेटी हुई। बेटे तो बचपन में ही मर गए और बेटी, जो बची रही, वह बीमार रहा करती थी। उसका नाम विद्यावती था। उन्होंने अपनी पुत्री की शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था की थी। विद्यावती को हिंदी, बंगला और संस्कृत का अच्छा ज्ञान था।

1.1.9 देशभक्त हरिश्चन्द्र :

अंग्रेज राजभक्त परिवार में जन्म होने पर भी हरिश्चन्द्र के मन में बचपन से ही अपने देश के प्रति प्रेम एवं आदर की भावना थी। उन्होंने अपने कुल के मान-सम्मान की परवाह किए बिना शताब्दियों से जो अंग्रेज हुकूमशाह हिंदुस्तान पर अन्याय कर रहे थे, उनके विरोध में अपना क्रांतिकारी आंदोलन छेड़ दिया। अंग्रेजों ने जाति-धर्म-वर्ण को माध्यम बनाकर देश की जनता में फूट डाली जिससे समाज देशोन्नति को भूलाकर जाति-धर्म के नाम पर एक-दूसरे से लड़ने लगा। ऐसे पथभ्रष्ट देशवासियों में देशप्रम की भावना जगाने का कार्य भारतेन्दु ने किया। उन्होंने इस कार्य में साहित्य को सबसे अधिक सशक्त साधन मानकर उसके माध्यम से देश के लोगों में देशप्रेम की सोई हुई भावना को जगाने का कार्य किया।

1.1.10 सहृदयता :

भारतेन्दु के व्यक्तित्व का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण था-सहृदयता। काशी के जनसाधारण की मस्ती, फक्कडपन और हास-परिहास प्रियता उनकी सहृदयता को स्पष्ट करती है। किसी की भी पीड़ा देखकर उनका हृदय विव्हल हो उठता था; इसी सहृदयता के कारण ही वे न धन की रक्षा कर सकें और न उसे बढ़ा सके। धन के लालच ने उनके पूर्वजों के मन की सहृदयता, राष्ट्रीय आत्मसम्मान और मानव सुलभ भावनाओं को खा

डाला था; इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया था कि, वे कभी धन का लालच नहीं करेंगे जो इन्सान की इन्सानियत को छीनता है। अपने देश में चारों ओर फैली दरिद्रता, भूखमरी के वातावरण में उनसे जितना हो सका उन्होंने पीड़ितों की मदद की। जो उनकी सहृदयता का प्रतीक थी।

1.1.11 स्वाभिमानी :

भारतेन्दु एक स्वाभिमानी व्यक्तित्व से परिपूर्ण इन्सान थे। उन्होंने जीवन में कठिन परिस्थितियों में भी अपनी स्वाभिमानी वृत्ति के साथ समझौता नहीं किया। भारतेन्दु के मिलनेवालों और साथियों में बहुत से बड़े - बड़े आदमी थे। उनके मित्रों में राजा, महाजन और जमींदारो की कमी न थी। स्वयं काशीराज की उन पर बड़ी कृपा थी; सहृदय और मिलनसार व्यक्तित्व के कारण वे अपने पास के धन से जरूरतमंदो की मदद करते थे, जिससे कर्ज और खर्चिलेपन के नाम से उनकी शिकायत होने पर काशिराज ने उनके आगे प्रस्ताव रखा कि, वे उन्हीं के पास रहें और हाथखर्च के लिए बीस रूपये रोज ले जाए, उन्होंने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करके, वे अपने महाराष्ट्री मित्र के पास पढ़ने-लिखने का सामान लेकर चले गये। इस छोटी सी घटना से स्पष्ट होता है कि, स्वाभिमान उनके व्यक्तित्व में कूट - कूट भरा था ।

1.1.12 क्रांतिकारी :

भारतेन्दु के पूर्वज अंग्रेजों के भक्त थे। वे उनके इशारों पर ही अपनी राजव्यवस्था चलाते थे। सन् 1857 से पहले भी कम्पनी राज में ही-अंग्रेजों की तरफदारी करनेवालें, देशी व्यापारी और महाजन भी यह देख रहे थे कि, अंग्रेजी राज में देश के उद्यम-व्यवसाय तबाह हो रहे हैं और चारों तरफ दरिद्रता फैल रहीं है। महँगाई, दुगुना टैक्स, रोग, पुलिस-अफसरों के अत्याचारों से जनता त्रस्त है, लेकिन किसी में भी उनके खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत नहीं थी। इतिहास विख्यात अमीचन्द के घराने में जन्में देशभक्त साहित्यकार भारतेन्दु ने पहली बार लिखा -

"अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।

पै धन बिदेस चलि जात इहै अति खारी।।"[1]

जिससे उनकी क्रांतिकारी भावना व्यक्त होती है।अंग्रेजों ने लूट-खसोट, जाति-धर्म, वर्णभेद के हथकंडे अपनाकर लोगों में फूट डाली जिससे समाज अनेक टुकडों में बँट गया था। ऐसे समाज में एकता, देशप्रेम और विदेशी शासन के प्रति असंतोष निर्माण हुए समाज में देशप्रेम जगाने का क्रांतिकारी कार्य भारतेन्दुने किया।

1.1.13 उद्‌बोधनकारी व्यक्तित्व :

भारतेन्दु का व्यक्तित्व बहुआयामी उदबोधनकारी था। भारतेन्दु की व्यक्तिगत इच्छाएँ देश और समाज की इच्छाओं में घुल-मिल गयी थी। उन्होंने धन का उपयोग धार्मिक उत्सव के लिए, विदेश यात्रा के लिए, हिन्दी विश्व विद्यालय स्थापना के लिए और व्यापार की उन्नति के लिए, कॉलेज खोलने के लिए किया। इन विविध क्षेत्रों की उन्नति को उन्होंने अपना लक्ष्य बनाया था। जिसकी पूर्ति के लिए वे सदैव प्रयत्नरत रहे। समाज की उन्नति के लिए उन्होंने शिक्षा के प्रसार को प्रभावी समझा। मिल्टन और प्रेमचन्द जैसे महान लेखकों की परम्परा का अनुसरण करते हुए भारतेन्दुने अध्यापन कार्य किया था। पहले विद्यार्थियों की संख्या कम थी, तब उन्हें घर पर ही पढ़ाते थे, बाद में चौखंभे में स्कूल चलाया। अंधश्रद्धा, जातिप्रथा, देश की आंतरिक फूट-कलह को समूल नष्ट करके देश में नवचेतना जागृत की ।

1.1.14 अन्याय व अत्याचार के प्रति विद्रोह :

भारतेन्दु ने अन्याय व अत्याचार का विरोध करने के लिए साहित्य को अपना हथियार बनाकर उसके सहारे अन्याय के प्रति लढ़ाई लढ़ी। उन्होंने भक्त राज्यव्यवस्था, जातिप्रथा, उच्च वर्गो की खुशामद पसंदगी आदि की कड़ी आलोचना करके जनता को सचेत किया तथा विदेशी शासनव्यवस्था के विरोध में भारतेन्दु ने

---

1. शिवप्रसाद मिश्र - भारतेन्दु - पृष्ठ - 134

आवाज उठायी; अंग्रेज शासकों ने जिस छल-बल और व्यापारिक हथकण्डों को अपनाकर भारत को लूटा था, उसका सजीव चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में विशेषत: नाटक व काव्य के अंतर्गत करते हुए अंग्रेजी शासन और उनकी भ्रष्ट कुटनोति से जनता को जागृत करके, उनमें अन्याय का विरोध करने की विद्रोही वृत्ति को जगाया ।

1.1.15 संघर्षशील एवं जुझारू व्यक्तित्व :

हरिश्चन्द्र पाँच वर्ष की आयु में ही मातृहीन और पितृहीन हो गए थे। इस प्रगतिशाली बालक को बचपन से ही संसार में संघर्ष का सामना करके अपना रास्ता खुद बनाना पड़ा था। इसी कारण उनका व्यक्तित्व संघर्षशील जुझारू बना था। उन्होंने जीवन के कई उतार-चढ़ाओं, कठिन परिस्थितियों में हिम्मत न हरकर आत्मविश्वास के साथ उन मुश्किलों का सामना किया था। इसी संघर्ष की भावना ने उन्हें देशोन्नति के लिए, लोगों को जागृत करने की प्रेरणा दी थी।

1.1.16 मृत्यु :

6 जनवरी सन् 1885 में भारतेन्दु देहावसन हुआ। मात्र चौंतीस वर्ष और चार महीने की जीवन अवधि में उन्होंने जितना कुछ किया, वह किसी शतायुषी से भी कम नहीं था। उनकी सामयिक मृत्यु का कारण उनकी पारिवारिक दु:स्थिति को माना जाता हैं।

1.2. कृतित्व :

भारतेन्दु ने हिंदी साहित्य क्षेत्र में साहित्य की विविध विधाओ का लेखन करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था। उन्होंने अपने अल्प जीवनकाल में नाटक, काव्य पुरातत्व और इतिहास, जीवनी, साहित्यिक निबन्ध आदि गद्य साहित्य का सृजन किया । हिन्ही साहित्य क्षेत्र में भारतेन्दु ने एक कवि, नाटककार, सम्पादक, निवन्ध, लेखक, समीक्षक एवं पत्रकार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई थी । अपने विचारों को प्रसारित करने के लिए 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'बालावोधिनी' आदि पत्रिकाएँ निकाली। अंग्रेजों के जुल्मी शासनकाल में जब सारा देश कष्टमय जीवन

व्यतीत कर रहा था, तब उनमें देशाभिमान की भावना जागृत करने के लिए यह पत्रिकाएँ बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध रहीं। उनका साहित्यिक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा। वे 19 वीं शताब्दी के प्रतिनिधि साहित्यकार थे। मातृभाषा के नि:स्वार्थ सेवक, देशभक्त, परदु:खकातर, उदार, धर्मपरायण आदि गुणों से संपन्न एक सच्चे इन्सान और एक बहुमुखी साहित्यकार थे।

1.2.1 कहानीकार :

भारतेन्दु ने केवल एक कहानी लिखी, जिसका नाम था - 'एक कहानी आपबीती, कुछ जगबीती।'

1.2.2 उपन्यासकार हरिश्चन्द्र :

1) रामलीला

2) हमीरहठ (अपूर्ण अप्रकाशित)

3) राजसिंह (अपूर्ण)

4) सुलोचना

5) मदालसोपाख्यान

6) शीलवती

7) सावित्री चरित्र

1.2.3 नाटककार हरिश्चन्द्र :

मौलिक नाटक :

1) वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (प्रहसन) - 1873

2) प्रेमजोगिनी (नाटिका) - 1875

3) सत्यवादी हरिश्चन्द्र (नाटक) - 1875

4) भारत जननी (ओपरा) - 1877

5) भारत दुर्दशा (दुखान्त नाटक) - 1880

6) नीलदेवी (गीति - रूपक) - 1881

7) अंधेरनगरी (प्रहसन) - 1881

अनुदित नाटक :

1) विदयासुन्दर (नाटक) - 1868

2) रत्नावली (नाटिका) - 1868

3) कर्पूरमंजरी (भाण) - 1875

4) मुद्राराक्षस (नाटक) - 1878

5) दुर्लभ बन्धु (नाटक) - 1880

1.2.4 एकांकी :

1) पाखण्ड - विडम्बन (रूपक) - 1872

2) धनंजय - विजय (व्यायोग) - 1873

3) विषस्य विषमौषधम् (भाण) - 1876

1.2.5 आलोचनाएँ :

1) नारदसूत्र

2) भक्ति सूत्र वैजयंती

3) तदीय सर्वस्व

4) अष्टपदी का भाषार्थ

5) श्रुति रहस्य

6) कुरान शरीफ का अनुवाद

7) प्रेमसूत्र

1.2.6 यात्राएँ :

बीस साल की आयु में भारतेन्दु कानपुर, लखनऊ सहारनपुर, मसूरी लाहौर, अमृतसर, दिल्ली, आगरा आदि स्थानों की यात्राएँ की। उन्होंने हिन्द प्रदेश के अनेक पिछड़े हुए भाग देखें। उन्होंने लखनऊ यात्रा, संस्मरण, हरिद्वार यात्रा, जबलपुर

यात्रा, सरयूपार यात्रा, वैदयनाथ की यात्रा संस्मरण एवं जनकपुरकी यात्रा संस्मरण भारतेन्दु की यात्रा सिर्फ शौकिनों की न थी, बल्कि उनकी शिक्षा का आवश्यक अंग था।

1.2.7 काव्यसंग्रह :

1) गीतगोविन्दानंद

2) प्रेम माधुरी

3) प्रेम फुलवारी

4) प्रेम मालिका

5) प्रेम प्रलाप

6) प्रेम तंरग

7) मधुमुकुल

8) होली

9) मानलीला

10) कार्तिक स्नान

11) प्रेमाश्रुवर्षण

1.2.8 पत्र - पत्रिकाएँ :

1) कविवचन सुधा

2) हरिश्चन्द्र मैगजीन

3) बालबोधिनी

4) हरिश्चन्द्र - चन्द्रिका

5) हिन्दी प्रदीप

6) सदादर्श

7) भागवत तोषिनी

1.2.9 निबंधकार हरिश्चन्द्र :

1) किसका शत्रु कौन है

2) ग्रीष्मवर्णन

3) ग्रीष्म ऋतु

4) एक अद्भुत अपूर्ण स्वप्न

5) स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन

6) वैष्णवता और भारतवर्ष

7) नाटक

8) जातीय संगीत।

1.2.10 ऐतिहासिक रचनाएँ :

अग्रवालों की उत्पत्ति, चरितावली, पुरावृत्त लेख, महाराष्ट्र देश इतिहास, दिल्ली का दरबार दर्पण, खत्रियों की उत्पत्ति, उदयपुरादेव, बूँदी का राजवंश, कालचक्र, रामायण का समय, पंचपवित्रात्मा, काश्मीर कुसुम, बादशाहा दर्पण ।

1.2.11 धार्मिक रचनाएँ :

तहकीकातपुरी की तहकीकात, दुषण मलिका, कार्तिक नैमित्तिक कृत्य, पुरूषोत्तम मास विधान, माध स्नान विधि मार्गशीर्ष महिमा, श्रुति रहस्य, भक्तिसूत्र, वैजयन्ती, तदीयसर्वस्व श्री वल्लभीय सर्वस्व, हिन्दी कुरान शरीफ, श्री युगुल सर्वस्व उत्सवाबली, वैष्णव सर्वस्व, ईशासृष्ट और ईशकृष्ण, श्री वल्लभाचार्य कृत चतुश्लोली, वैष्णवता और भारतवर्ष।

1.2.12 प्रहसनात्मक रचनाएँ :

स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, लेवी प्राण लेवी स्तोत्र पंचरतन, खुशी, जातीय संगीत, भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है, पाँचवें (चूसा) पैगम्बर, मुशायरा, कानून ताजीरात शौहर, संगीत सार ।

निष्कर्ष :

भारतेन्दु के व्यक्तित्व की छाप उनकी कवित्व में दिखायी देती है। उनके व्यक्तित्व में देशप्रेम, स्वाभिमान और सत्यवादिता कूट-कूटकर भरी थी। अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से जीवन के विविध क्षेत्रों में जैसे राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि में व्याप्त विकृतियों से समाज को सचेत करने का उल्लेखनीय कार्य किया।

बहुमुखी साहित्यकार के साथ ही भारतेन्दु एक सहृदय व्यक्ति भी थे। उन्होंने कभी धन का लालच नहीं किया। लेकिन कठिन परिस्थितियों में भी अपना सब धन लुटाकर भी लोगों की मदद की। हास-परिहास से लोगों का स्नेह जुटाया और लोगों का मानसिक और बौदिधक उद्‌बोधन किया।

19 वीं शताब्दी में देश का वातावरण अंग्रेजों और मुसलमानों के आक्रमणों से इतना दूषित हुआ था कि, भारत की जनता एक अस्तित्वहीन, पराधीन जीवन व्यतीत कर रही थी। भारतेन्दु ने ऐसे अस्तित्वहीन समाज में देशप्रेम की भावना जगाकर उन्हें अपने अस्तित्व के लिए लढ़नें के लिए प्रेरणा दी। उन्होंने लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाकर नवजागरण की प्रेरणा भर दी। जिससे समाज अपने अधिकारों के प्रति जागृत हुआ और स्वतंत्रता का अपना जन्म सिद्‌ध हक प्राप्त करने के लिए इकठ्ठा होकर लढ़ने लगा स्वातंत्र्य प्राप्ति की ज्वलंत भावना भारतीय जनता में भर देने का महान कार्य इस श्रेष्ठ रचनाकार ने किया। इसलिए वे एक महान सचेत रचनाकार माने गये।